© 2018 IJSRSET | Volume 4 | Issue 6 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099

इक्कीसवीं सदी का संस्कृत साहित्य : स्वरूप एवं संभावनाएँ

नेहा राय
शोध छात्रा
आर0एस0एस0 कैम्पस,
भोपाल

ब्रह्मा की कृपा से रचा हुआ संसार बड़ा दिव्य सुन्दर एवं रमणीय लोकमंच है। जगत की सृष्टि में कारण रूप धाता ही है। ठीक उसी प्रकार से घट निर्माण में भी कुम्भकार का कारणत्व प्रतीत होता है। इसी घट से नाना कार्य विधान होते हैं।

कवि भी कुम्भकार और ब्रह्मा की तरह संसार को अपने रसमयी काव्यों से जन रूपी क्यारी में सिंचन करते हैं, उन विविध रसों के सिंचन से विविध प्रकार की भावनाओं का, संस्कारों का, विचारों का उद्गम होता है। यह परम्परा अति प्राचीन कालीन है। नारदादियोगी वृन्द भी अपने–अपने छन्दों में काव्यों की रचना करके संसार को रंजित किया है। यह काव्यधारा समय–समय पर विषयों को बदला है। ऐतिहासिक काल में कवियों ने राजाओं के वर्णन को लेकर कई काव्य निर्माण किये।

किन्तु आदिकाव्य प्रामाणिक रूप से रामायण माना जाता है। रामायण के कवि वालमिकि ब्रह्मा की दया से द्रवीभूत होकर

''मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौञ्चमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।।''

इस तरह के हृदय उद्गार करुण रस में प्रकट हुआ। ब्रह्म जी की कृपा से नारद जी के आशीष से रामायण का कार्य पूरा हुआ। भगवान श्री राम की वनवास यात्रा निश्चय ही लोकजन के लिए दुःखपूर्ण रहा होगा। उसी तरह से सीता का त्याग अत्यन्त ही दुःखत अवस्था का अनुभव उस समय के समाज ने किया होगा। क्रम के अनुसार काव्य विधा में बदलाव आया द्वापर युग में महाभारत ऐतिहासिक काव्य का रूप अथवा ख्याति प्राप्त किया। महाभारत में प्रायः कई रसों का समावेश है। किन्तु मुख्यनायकत्व युधिष्ठिर का होने से शान्त रस की प्रधानता महाभारत में पाई जाती है। रामायण तथा महाभारत के बाद तदुत्तर कालीन जिसने भी कवि हुए उन कवियों का मुख्य रूप से काव्यों का आधार यही दो काव्य रहे हैं, किन्तु यवन राजाओं के दबाव पर कई कवियों की लेखनी उनके प्रशंसा के लिए थे, ठीक उसी प्रकार उन कवियों का अनुकरण करते हुए

IJSRSET1846152 | Received : 05 Jan 2018 | Accepted : 20 Jan 2018 | January-February-2018 [(4) 6 : 222-229]

राजकुमार तथा राजकुमारियों का सौन्दर्य एवं प्रेम वर्णन तथा राजवंश परम्परा की कीर्ति विस्तार करते रहे हैं। इस समय के अनुसार इस प्रथा का भी लोप होता गया, क्योंकि पहले राज्याश्रित कवि होते थे। अतः वे राज्यप्रशंसा में अपने काव्यों का निर्माण करते थे।

वर्तमान समय में राजपरम्परा नष्ट हो चुकी है प्रजातन्त्र परम्परा में व्यक्ति की प्रधानता बढ़ी है, इस कारण से आधुनिक जगत तथा इस जगत में संस्कृत साहित्य की धारा भी प्रजातान्त्रिक हुई है। इस धारा के परिपोषण में राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, लाल बहादुर संस्कृत विद्यापीठ तथा कई संस्कृत विश्वविद्यालय लगे हुए हैं। आधुनिक कवि अपने अपने विचार के अनुसार तथा पाण्डुलिपियों के आधार पर काव्यों का निर्माण किया है।

जिस सारणी में प्रमुख कवि सत्यव्रत शास्त्री, प्रो0 राधावल्लभ त्रिपाठी, प्रो0 अभिराज, राजेन्द्र मिश्र, प्रो0 भास्कराचार्य, प्रो0 सूर्यमणि रथ, प्रो0 रेवा प्रसाद द्विवेदी, प्रो0 इच्छाराम द्विवेदी, प्रो0 कैलाश नाथ द्विवेदी ये सभी कवि इक्कीसवीं सदी के प्रसिद्ध कवियों में जाने जाते हैं। इनकी काव्य लेखन परम्परा अद्भुत है। जो आधुनिक काव्य–प्रेमियों के लिए एक आदर्श ग्रन्थ है। इस सारणी में 100 से अधिक कवि हैं जो कि अपने–अपने काव्य रचनाओं से इस इक्कीसवीं सदी को प्रतिभासित किया है। इनका काव्य जगत रंजन मनोहारी राष्ट्रप्रेम उत्पादक तथा सहृदयों के हृदय में रसोद्भावक है। साथ ही समाज तथा संस्कृति को लेकर कई काव्यों की रचनाएँ हुई है। जो सांस्कृतिक, नैतिक, सामाजिक रूप से समाज को उत्कृष्ट स्थान पर पहुँचाने के लिए कवियों का योगदान महत्वपूर्ण है इसी क्रम में हम कुछ कवियों का परिचय एवं उनके द्वारा रचित ग्रन्थों का सिहावलोकन करते हैं।

वर्तमान समय में संस्कृत–काव्य के प्रकार :

इक्कीसवीं सदी के संस्कृत साहित्य में **गजल, कव्वाली, गीतियाँ, उपन्यास, लघुकथा, जीवनी, आत्मकथा, यात्रावृत्तान्त, हास्य** आदि काव्य के प्रकार हैं। छन्दोमुक्त नव्यकाव्य की रचना के प्रति संस्कृत लेखकों का झुकाव हुआ है। नाटक, व्यंग्य–लेख, ललित–निबन्ध आदि नवीन विधाओं में लेखन हुआ है। दूरदर्शन पर संस्कृत–धारावाहिकों के प्रसारण भी हुए। संस्कृत में अबतक दो फिल्में भी बनी है। इस प्रकार संस्कृत में नवीन विधाओं में निरन्तर सृजन हो रहा है। आधुनिक संस्कृत लेखन में गद्य की अपेक्षा पद्य को अधिक प्रश्रय मिला है।

संस्कृत भाषा में प्राचीन शैली और भावबोध की रचनाओं के साथ–साथ नवीन शैली और भावबोध की रचनाओं का सर्जन इस भाषा की अद्भुत सर्जन क्षमता और जीवन्तता का द्योतक है। इक्कीसवीं सदी में गद्य–पद्य दोनों ही क्षेत्रों में नवीन विधाओं को प्रश्रय मिला है।

लघुकथा :

अधिकांश लघु काव्यों की रचना पारम्परिक वर्णिक एव मात्रिक छन्दों में हुई है। समाज के परिप्रेक्ष्य में अनेकों लघुकाव्यों की रचना हुई है।

"कवि हेमचन्द्ररामकृत" परशुरामचरित्, स्वयप्रकाश शास्त्री कृत इन्द्री.... काव्यं, ''वेलणकर कृत'' विष्णुवर्धापनम् आदि लघुकाव्य पुराकथित हैं। ''अभिराज राजेन्द्र मिश्र कृत'' पराम्बाशतकम् तथा युगलशतकम् विजयसारथि कृत मन्दाकिनी आदि लघुकथा देवस्तुति परक लघुकथा हैं।

सामाजिक समस्याओं अस्पृश्यता– निवारण, नारीदुर्दशा, दहेजप्रथा, कुरीति–ग्रस्तता, भ्रष्टाचार आतंकवाद आदि पर आधारित काव्यों में डॉ0 उमाकान्त शुक्ल कृत कूहा, ''श्रीमति सरोजिनी देवी कृत'' स्त्रीशिक्षालयम् आदि लघुकाव्य हैं।

आधुनिक युग में प्रकृति वैज्ञानिक रूप का चित्रण भी हुआ है। जैसे– **लक्ष्मण सिंह अग्रवाल कृत** कुटुम्बनी तथा **अर्कसोमयाजी कृत** ब्रह्मञ्जलिः आदि लघुकाव्य हैं।

मथुराप्रसाद दीक्षित कृत अन्योक्ति– तरङ्गिणी, **अभिराज राजेन्द्र मिश्र कृत** आर्यान्योक्तिशतकम् तथा **रामकरणशर्माकृत** वीणासन्ध्या आदि काव्यों में अन्योक्तिमय लघुकाव्य हैं।

आधुनिक जीवन :

जगत को विषय बनाकर काव्यों में हास्याव्यंग्यपरक अनेक काव्य हैं। जैसे– **वागीश शास्त्री कृत** नर्मसप्तशती, **शिवदत्त शर्मा चतुर्वेदी कृत** हा, हा, हू, हू शतकम् आदि लघुकाव्यों में हास्य व्यंग्य के मुख्य स्वर हैं।

नवगीत :

कवि की व्यक्तिगत भावनाओं, रुमानियत और स्वच्छन्द मनःस्थितियों के चित्रण की प्रवृत्ति के फलस्वरूप नवगीत– विधा का विकास हुआ। बंकिम चन्द्र चटर्जी का गीत वंदे मातरम् राष्ट्रीय गीत की प्रतिष्ठा पाने वाला संस्कृत गीत है। राष्ट्रवादी धारा से जुड़े हरिदत्त पालीवाल निर्भय, रामनाथ ''प्रणयी'' आदि के कवियों के गीतों में उनका काव्य–व्यक्तित्व अग्निज्वाला के समान प्रतीत होता है।

माया प्रसाद त्रिपाठी ने गीतों में बिम्बविधान और नव्य–शिल्प का समवाय किया है।

रागकाव्य : जयदेव के गीतगोविन्द की परम्परा बढ़ती रही और रागकाव्यों की रचना से संस्कृत रचना सम्पन्न होती है। आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी की नवीनतम कृति गीतधीवरम् इस अर्थ में एक श्रेष्ठ परम्परागत काव्य है।

सगीतिका : रागकाल से ही कुछ समानता रखती विधा सगीतिका में भी अनेक रचनायें समाने आयी है। रागकाव्य और सगीतिका दोनों अभिनेय काव्य हैं। इनमें गेयता की प्रमुखता होने से श्रव्यकाव्य के रूप में इनका व्यवहार होता रहा है। श्रीवनमाला भवालकर की दो सगीतिकायें हैं, जिनके नाम है– पार्वतीपरमेश्वरम् तथा रामवनगमनम्।

गजलकाव्य : उर्दू काव्य परम्परा से संस्कृत काव्य में नवीन काव्य परम्परा का प्रवर्तन हुआ। आधुनिक लेखकों में श्री राजेन्द्र मिश्र तथा जगन्नाथ पाठक की गजलें उल्लेखनीय हैं। जगन्नाथ पाठक की गजलों में मनोवेदना और सूक्ष्म भावाभिव्यंजना होने के साथ ही उनकी गजल के शिल्प की समझ और इस विधा में गम्भीर भाषाभिव्यंजना भी है। राजेन्द्र मिश्र की गजलों की प्रशंस्य विशेषता है– रफीद और काफिये का आकर्षक संयोजन।

लोकगीतिपरक कविताएँ : संस्कृत साहित्य में अपने क्षेत्रीय धरातल से जुड़ी रचनाओं को लिखने का क्रम सदियों से चला आ रहा है। अब गांव– घर की, किसानों की तथा खेत खलिहानों की बातें संस्कृत कविता के अभिन्न अंग बनते जा रहे हैं।

डॉ0 राजेन्द्र मिश्र, श्रीमती नलिनी शुक्ला आदि कवियों ने हिन्दी में प्रचलित अनेक लोकगीत विधाओं का सफल प्रयोग किया है। डॉ0 राजेन्द्र मिश्र ने लोकगीत की विधा को

संस्कृत–काव्य–रचना के क्षेत्र में प्रतिष्ठित करने का प्रशंस्य कार्य किया है। इनकी स्कन्धहारीयम् (कहरवा) चौत्रकम् (चौती) ने अनेक मधुर– गीतियों की प्रायः ने प्रशंसा की है।

मुक्तछन्द : पिछले कई दशकों में संस्कृत–साहित्य जगत में एक अन्य धारा प्रवाहित हुयी है जिसमें पारम्परिक या नवीन छन्दो विधान का सर्वथा अभाव है। इस निर्बन्ध छन्दोमुक्त काव्य में एक लय या गति विद्यमान है। इसमें आधुनिक मानव–जीवन के विविध पक्षों, मानसिक द्वन्द्वों, संत्रासों, पीड़ाओं एवं भावबोधों को अभिव्यंजित किया गया है।

जैसे– मायाप्रासद त्रिपाठी कृत कतिपय काव्य एवं बनमाली बिश्वाल कृत व्यथा, प्रियतमा, यात्रा एवं वेलेन्टाइन–डे–सन्देशः इत्यादि हैं।

यात्रावृत्तान्त : आत्मकथात्मक शैली में यात्रावृत्तान्त एक अन्य आधुनिक विधा है। पारम्परिक शैली में रचित महामहोपाध्याय गणपति शास्त्री का ''सेतुयात्रा वर्णन'' में हिन्दू आदर्शों तथा समकालीन विषयों, सामाजिक कुरीतियों का भी उल्लेख है। सत्यव्रत शास्त्री की ''थाईदेशविलासम्'' तथा राजेन्द्र मिश्र की अनेक संस्कृत कविताओं में थाईलैण्ड के जीवन, सौन्दर्य तथा तद्विषयक स्मृतियों की अभिव्यक्ति है।

प्रो0 राधावल्लभ त्रिपाठी की ''धरित्री दर्शनम्'' में विमान में देखी जाती हुई प्रथिवी का वर्णन है। प0 नवलकिशोर काङ्कार की ''यात्राविलासम्'' में उत्तराखण्ड की यात्रा का वर्णन है।

रेडियोरूपक : इस आधुनिक युग में संस्कृत के नाटक आकाशवाणी से प्रसारित होने लगे। इन नाटकों का शिल्प नाटकों जैसा हो गया। नान्दी, प्रस्तवना, भरतवाक्य की पद्धति लुप्त होती गयी। वैज्ञानिकों की अंतरिक्ष यात्रा को लेकर भी संस्कृत में एकांकी, रूपक एवं ध्वनि–रूपकों की रचना हुई।

समस्यापूर्ति : समस्यापूर्ति के विविध रूप संस्कृत–पत्र–पत्रिकाओं में सामने आये हैं। आधुनिक पत्र–पत्रिकायें भी इसी विधा को प्रयाप्त प्रश्रय दे रही हैं। समस्या पूर्ति के विपुल स्वरूप का प्रदर्शन संस्कृत–कवि–सम्मेलनों में दिखता है। इन सम्मेलनों के आधार पर अनेक कवियों की कुसुमांजलि (वाराणसी) वाणीविलसितम् प्रथम और द्वितीय भाग (दो खण्डों) गंगानाथ–झा–केन्द्रीय–संस्कृत–विद्यापीठ इलाहाबाद से प्रकाशित हैं।

उपन्यास : वर्तमान समय संस्कृत दृ नव–लेखन का स्वर्णिम युग कहा जा सकता है। बीसवीं सदी के महान आरम्भ में अम्बिकादत्त व्यास की महान रचना ''शिवराजविजयम्'' से संस्कृत उपन्यास का गौरवशाली प्रारम्भ माना जाता है। आधुनिक उपन्यासों की विशेषता से युक्त उपन्यासों में ''कुसुमलक्ष्मी'' ''द्वा सपर्णा'' ''उदयन चरितम्'' तथा नवें दशक में डॉ0 केशवचन्द्र दाश के उपन्यास उल्लेखनीय हैं।

ऐतिहासिक विषयवस्तु का प्रामाणिक अनुसंधानपूर्वक निरूपण तथा पात्रों के मनोविज्ञान का उद्घाटन श्री नाथहसूरकर के उपन्यासों में पाया जाता है। सत्यप्रकाश सिंह का उपन्यास ''गुहावासी'' में देवदत्त और उपनिषद् दर्शन से अभिप्रेत है। आधुनिक परिवेश का चित्रण करते हुए समसामयिक कथावस्तु पर आधारित केशवचन्द्रदास के उपन्यास सराहनीय है। डॉ0 दाश के शीतलतृष्णा, प्रतिपद, निकषा, अरुणा, शशिरेखा आदि 15–20 उपन्यास भारतीय जनजीवन और राजनीति अथवा नगरजीवन की घटनाओं पर आधारित हैं।

विश्वनारायण शास्त्री के उपन्यास ''अविनाशी'' को केन्द्रीय साहित्य–अकादमी का पुरस्कार मिल चुका है। कलानाथ शास्त्री का उपन्यास ''संस्कृतोपासिकाया'' आत्मकथा नाम से कथानकवल्ली तथा जीवनस्य पाथेयम् नाम से आख्यानवल्लरी में भी प्रकाशित है जो आत्मकथात्मक शैली में लिखित उपन्यास है। युवा लेखक उमेश शास्त्री मुध के उपन्यास भी आधुनिक शैली में निबद्ध हैं।

जीवनवृत्त : आधुनिक युग में भी पद्यबद्ध जीवन–चरित लिखे गये हैं। म0म0पं0 शिवकुमार मिश्र (काशी) ने यतीन्द्रदेविशिवचरितम् खण्डकाव्य के रूप में लिखा।

गद्यबद्ध जीवनियों में कुमार ताताचार्य का चण्डमाकताचार्यजीवनचरितम्, गंगाधरशास्त्री का राजारामशास्त्रिजीवनचरितम्, तथा मेधाव्रताचार्य का नारायणस्वामीचरितम् और महर्षि विजानन्दचरितम् आदि उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

संस्कृत विद्वानों का जीवन–चरित भी लिखा गया। जैसे– भारती के संपादक पं0 जगदीश शर्मा के पिता पं0 बिहारीलाल शर्मा का गद्यबद्ध जीवन–चरित–बिहारीस्मारिका।

लघुकथा : कथा की परम्परा संस्कृत में शताब्दियों नहीं वरन् सहस्राब्दियों पुरानी है। यह परम्परा पंचतन्त्र, हितोपदेश, भोजप्रबन्ध आदि से लेकर आज तक निरन्तर प्रवाहमान है। लगभग सौ की संख्या से प्रकशित लघुकथा संग्रह और प्रायः प्रत्येक पत्र–पत्रिका का आवश्यक अंग बनती जा रही लघुकथा की प्रगति को देखते हुए हम कह सकते हैं। यह विद्या वर्तमान संस्कृत–गद्य–साहित्य की सर्वाधिक सर्वप्रिय विधा मानी जाती है।

भट्टमथुरानाथशास्त्री, कलानाथशास्त्री, अभिराजराजेन्द्र मिश्र, डॉ0 प्रभुनाथ द्विवेदी, डॉ0 नलिनी शुक्ला, दुर्गादत्ताशास्त्री, बनमाली आदि अनेकों लेखकों के बहुआयामी कथासंग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। वर्तमान कथा–साहित्य में अनेक टुप् कथाओं का भी प्रकाशन हो रहा है। आधुनिक संस्कृत लेखन में लेखन रूपश–कथाओं का प्रकाशन लेखकों का इस विधा की ओर रुझान को व्यक्त करता है।

नारायण दाश की स्पश कथा प्रतिकपम् का प्रकाशन हुआ। सम्भाषण सन्देशः के नवम्बर दिसम्बर 2002 के अंकों में जनार्दन हेगडे द्वारा लिखित स्पश कथा व्यूहभेद क्रमशः प्रकाशित हुई।

इक्कीसवीं सदी के काव्य तथा कवि

1. श्री के0एल0 रंगीलादास	:	व्यंग्यात्मक कांग्रेस गीता
2. श्री के0कल्याणी	:	भारती विलाप
3. श्री गणपति शास्त्री	:	ध्रुवाचरितम्, ताटका परिणयम्, तिरगशतकम्
4. श्री विजयराघव	:	सुरभिसंदेशम्
5. श्री रंगाचारी	:	पिकसंदेशम्
6. श्री रवि वर्मा तम्बूरान	:	पद्यपेटिका
7. श्री सुन्दर राजन	:	सुरश्मिकाश्मीरम् अभाणभारम्
8. श्री सूर्यमणि रथ	:	समस्यापूर्ति शतकम्
9. श्री केशवचन्द्रदास	:	ईशा

10. श्री वनेश्वर पाठक : प्लवंगदूतम्
11. श्री रामाशीष पाण्डेय : मयूखदूतम्
12. श्री कृष्णमूर्ति : मत्कुणाष्टकम्
13. श्री राजगोपाल चक्रवर्ति : मधुकरदूतम्
14.श्री वेदकुमारी धई : उर्मिः
15. श्री पुष्करनाथ शास्त्री : वासन्ती
16. श्री नित्यानन्द शास्त्री : हनमुद्दूतम्
17. श्री शिवराम शास्त्री : हर्याणीयम्
18. श्री अभिनव शास्त्री : वैराग्यशतकम्
19. श्री वटुकनाथ शर्मा : बल्लदूतम्

20. श्री अभिराज राजेन्द्र : आर्यान्योक्ति शतकम्, चौरशतकम्, नवाष्टकमल्लिका
21. रेवाप्रसाद द्विवेदी : खण्डकाव्यम्
22. श्री गणपति शंकर शुक्ल : भूदान यज्ञ गाथा
23. श्री श्रीनिवास चक्रवर्ति : श्रीनिवास सहस्रनाम
24. श्री कलानाथ शास्त्री : जीवनस्य पृष्ठद्वयम् (उपन्यास), आख्यानवल्लरी (कथासंग्रह), नाट्यवल्लरी (नाटक), सुधीजनवृत्तम्, कवितावल्लरी
25. श्री लोकनाथ शास्त्री : गणेशाष्टकम्
26. श्री रामस्वरूप शास्त्री : भावमाला शतकम्
27. श्री बालकृष्ण शर्मा : संस्कृत मुक्तकम्
28. श्री विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र : सारस्वतसनुन्मेषः
29. श्री सूर्यनारायण व्यास : भव्य विभूतम्
30. श्री बी0 सुब्बाराव : दक्षिणात्य मेघसंदेशम्।

इत्यादि कवि आधुनिक संस्कृत साहित्य में कार्यरत हैं। अतः हम कह सकते हैं कि दुनिया की सबसे प्राचीन भाषा संस्कृत का प्राचीन साहित्य तो सर्वाधिक समृद्ध है ही किन्तु वर्तमान आधुनिक काल में भी संस्कृत कवियों, लेखकों की कमी नहीं है। जहाँ एक ओर संस्कृत पत्र–पत्रिकाएँ, दैनिक समाचार पत्र प्रकाशित हो रहे हैं वहीं दूसरी ओर हजारों कवि, लेखक निरन्तर कविता, नाटक, कहानी, उपन्यास आदि लिखकर संस्कृत को मातृभाषा कहने वालों को चुनौती दे रहे हैं।

इक्कीसवीं सदी में संस्कृत साहित्य में संभावनाएँ :

यह सच है कि कवियों का प्रयत्न सराहनीय, प्रशंसनीय, वन्दनीय है किन्तु वर्तमान परिप्रेक्ष्य में समाज के उत्थान में विषयगत रचना भाषागत रचनाओं से कहीं अधिक श्रेष्ठ है। भाषा के शब्द

विन्यास में विविध शब्दों की जानकारी तो मिलती है किन्तु रस और शब्द से किसी का पेट नहीं भरता। उसके लिए समाज की प्रचण्ड आवश्यकताओं को देखते हुए इक्कीसवीं सदी के कवियों को चाहिए कि विविध सामाजिक उपयोगी व्यवसाय सम्बन्धि, चिकित्सा सम्बन्धी, प्रकृति संरक्षण सम्बन्धि, राष्ट्र प्रेम सम्बन्धी, भ्रष्टाचार सम्बन्धी, आंतकवाद निवारण उपाय सम्बन्धी, आरक्षण सम्बन्धी, अर्थव्यवस्था सम्बन्धी, वस्तु क्रय विनिमय सम्बन्धी, शिल्प सम्बन्धी, पर्यावरण सम्बन्धी, जनसंख्या प्रतिरोध सम्बन्धी इत्यादि परम आवश्यक काव्य निर्माण और प्रचार में कवियों का इक्कीसवीं सदी में योगदान परम आवश्यक है। क्योंकि ज्वलन्त समस्याओं से हटकर यदि कोई कार्य किया जाता है तो वह कार्य उतना श्रेयस्कर नहीं होता जितना कि समस्याओं के समाधान हेतु काव्यों का निर्माण आवश्यक है। इस विषय में कई विद्वानों की यह धारणा हो सकती है किक्या काव्य से इन समस्याओं का कोई सम्बन्ध है क्या? अथवा काव्यों से इन समस्याओं का समाधान भी हो सकता है क्या? तो उसके उत्तर में अत्यन्त प्रसिद्ध पाण्डुलिपि प्राचीन काल में भी रचे गये थे, किन्तु उसके उत्तर में अत्यन्त प्रसिद्ध पाण्डुलिपि प्राचीन काल में भी रचे गये थे, किन्तु उसका उपयोग तथा प्रचार न होने के कारण अश्व चिकित्साशास्त्रम्, विमाननिर्माणम्, शास्त्रम् इन दोनों शास्त्रों का एवं इस प्रकार के कई ग्रन्थों का लोप हो गया। जिसके कारण आज के समय में संस्कृत जगत के लोग तथा इतर लोग परस्पर संस्कृत के लोगों की उपेक्षा करते हैं। कदाचित् संस्कृत का श्लोक मात्र सुनने से कर्णश्राव्य तो होता है किन्तु उसका बहुत उपयोग नहीं होता इसलिए क्रियाक्षेत्र में संस्कृत की उपेक्षा हो रही है। यह संस्कृत कवियों के लिए बहुत बड़ी चुनौती है अतः इस बात को ध्यान में रखते हुए सामाजिक समस्याओं के समाधान हेतु ग्रन्थ रचना करे, सरल भाषा के साथ ललित शैली हो, जिससे संस्कृत भाषा का स्थान–आदर बना रहे, अन्यथा संस्कृत भाषा भी कालान्तर में ग्रीक, लैटिन, यूनानी भाषाओं की तरह लुप्त हो जाएगी।

अतः आम नागरिक की आवश्यकता को देखते हुए बहुत लोगों के लाा हो इस तरह का पाठ्यक्रम निर्माण तथा शक्ति से उसका पालन होना चाहिए।

निष्कर्ष :

संसार की समस्त विधाएँ मानव के इर्द–गिर्द घूमते हैं। मानव का अन्तिम लक्ष्य पाप–पुण्य–जन्म–मृत्यु के बन्धन से मुक्त होकर एकान्तिक सुख रूप परमानन्द रूप मोक्ष प्राप्ति में चर्म लक्ष्य स्वीकार करते हैं। किन्तु प्राथमिक दशा में दृष्टा दृष्ट दुःखों से मुक्ति पाना चाहते हैं।

अतः काव्यग्रन्थों से जीवों के विविध आयामों को देखते हुए उनके उद्धार के लिए कवियों की लेखनी चलनी चाहिए। जिससे जीवगत एवं काव्यगत लक्ष्य साम्य हो। यही भावना विद्या की है। कहा भी गया है– ''या विद्या सा विमुक्तये''।

अर्थात् समस्त दुखरूप अज्ञान से प्राथमिक तथा शास्वतिक मुक्ति ही विद्या का परम प्रयोजन है, ठीक उसी प्रकार काव्य–विद्या का भी प्राचीन काल से प्रयोजन रहा है किन्तु यह प्रयोजन मात्र ही दिखता है। काव्य पाठकगण अपने आप को ठगा सा महसूस करते हैं।

अतः इक्कीसवीं सदी के कवियों के लिए यह बहुत बड़ी चुनौती है कि समाज के अत्योदय के लिए किस प्रकार की काव्यविधा लिखी जाए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. काव्य प्रकाश, व्याख्याकार पं0 विश्वेवर पाण्डेय
2. संस्कृत सा0इति0, प्रो0 राधावल्ल्भ त्रिपाठी
3. संस्कृत सा0इति0, प्रो0 कैलाशनाथ द्विवेदी
4. संस्कृत सा0इति0, डॉ0 कीथ
5. संस्कृत सा0इति0, डॉ0 राकेश जैन
6. संस्कृतसाहित्येतिहास, प्रो0 लोकमणि दहाल
7. संस्कृत सा0बृहद् इति0, प्रो0 बलदेव उपाध्याय
8. आधुनिक संस्कृत काव्य की परिक्रमा, मंजुलता शर्मा
9. संस्कृत साहित्य बीसवीं शताब्दी
10. राष्ट्र दर्पण (शतककाव्य), लक्ष्मणसिंह अग्रवाल